वन उत्पादकता संस्थान, रांची

गाजरघास जागरुकता सप्ताह

दिनांक – 16.08.2021 से 22.08.2021

गाजरघास उन्मूलन (सफाई) कार्यक्रम : 19.08.2021

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुरोध एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के निर्देशानुसार संस्थान के निदेशक के मार्गदर्शन में गाजरघास जागरुकता सप्ताह दिनांक 16.08.2021 से 22.08.201 के तहत दिनांक 19.08.2021 को गाजरघास उन्मूलन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमे संस्थान के लगभग 69 वैज्ञानिकों,अधिकारियों,कर्मचारियों एवं परियोजनाकर्मियों ने भाग लिया। गाजरघास उन्मूलन (सफाई) कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के केंद्रों पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकना, पश्चिम बंगाल एवं वानिकी अनुसंधान एवं प्रसार केंद्र, हाजीपुर, बिहार में भी किया गया।

संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) डा. योगेश्वर मिश्रा ने गाजरघास की उत्पत्ति, पहचान एवं पहचानकर्ता के विषय में विस्तार से बताया। उन्होने बताया कि गाजरघास धरती का बोझ है एवं कृषि ऊपज को काफी प्रभावित करता है। इसके उन्मूलन के लिए अनेकों शोध कार्य किए जा चूकें है लेकिन सबसे सफल उपाय इसे उखाड़कर नष्ट करना ही साबित हुआ है। यह घास देश ही नहीं बल्कि अन्य देशों में भी लगभग सभी जगहों पर पाया जाता है जो कृषि फसल के अलावा मानव स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है। जैव नियंत्रण (Bio-control) का जिक्र करते हुए उन्होने बताया कि यद्यपि यह कीट गाजर घास उन्मूलन के लिए कारगर है लेकिन इसका दूष्परिणाम साल के वृक्षों का नुकसान

होता है। उन्होने शामिल प्रतिभागियों से अपील किया कि आज हम सभी परिसर के साथ–साथ संस्थान के आसपास के सड़क के किनारे

दोनो ओर कम से कम एक किलोमीटर के क्षेत्र को गाजरघास मुक्त करने का प्रयास करेंगे।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने कार्यक्रम में शामिल सदस्यों को सम्बोधित करते हुए बताया कि फूल आने से पहले गाजरघास को जड़ सहित निकालकर लगातार नष्ट करना सबसे कारगर उपाय है। उन्होने गाजरघास के दुष्परिणामों को विस्तार से बताया। उन्होने कहा कि मानव सांस की समस्या गाजरघास के दुष्परिणामों में से एक है। उन्होने यह भी बताया कि गाजरघास इतने नुकसानदायक है कि जानवर भी इसे नहीं खाते।

डा. नितिन कुलकर्णी ने इस घास के समूल नाश की बात कही एवं इसके लिए जागरुकता फैलाने की आवश्यकता पर बल दिया। इसके दुष्प्रभाव से लोगो को अवगत कराने से लोग अपने आस–पास से गाजरघास का सफाई करेंगे को स्वतः इसका उन्मूलन हो जायेगा। उन्होने कहा कि लोगो को इसके नुकसान से अवगत कराने की जरूरत है। लोग अपने आस–पास से गाजर घास की सफाई करेंगे तो स्वतः इसका उन्मूलन हो जायेगा। जरुरत है लोगों को इसके नुकसान से अवगत कराने का।

इस अवसर पर संस्थान के समूह समन्वयक (अनुसंधान) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की। विस्तार प्रभाग, सूचना तकनीकी प्रभाग एवं सम्पदा प्रभाग आदि के सहयोग से कार्यक्रम का सफल आयोजन सम्भव हुआ।

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सफाई अभियान

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सफाई अभियान

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सफाई अभियान

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सफाई अभियान

गाजरघास जागरुकता सप्ताह के अंतर्गत आयोजित सफाई अभियान

पर्यावरण अनुसंधान केंद्र, सुकना में आयोजित सफाई कार्यक्रम की झलकियां